प्रेषण अंतर्वाह

प्रलिम्सि के लयि:

विश्व बैंक, प्रेषण, विदेशी मुद्रा, **आर्थकि सहयोग और वकिास संगठन**, खाड़ी सहयोग परषिद, भारतीय राष्ट्रीय भुगतान नगिम, ई-कॉमर्स

मेन्स के लयि:

विश्व भर में प्रेषण पैटर्न, भारत में प्रेषण प्रवाह को प्रभावति करने वाले कारक

चर्चा में क्यों?

विश्व बैंक के **नवीनतम माइग्रेशन एंड डेवलपमेंट ब्रीफ** के अनुसार, भारत में **वर्ष 2022 में कुल प्रेषण 111 बलियिन अमेरिकी डॉलर के रूप में रिकॉर्ड-उच्च** स्तर पर था, परंतु **वर्ष 2023 में प्रेषण प्रवाह में केवल 0.2% की न्यूनतम वृद्धि** होने का अनुमान है।

- इसका मुख्य कारण OECD की अर्थव्यवस्था में विशेष रूप से उच्च तकनीक क्षेत्र की धीमी वृद्धि है और साथ ही **GCC देशों में प्रवासियों की कम मांग का भी इसमें योगदान** है।
- कुल मिलाकर देखें तो प्रेषण वृद्धि में विश्व स्तर पर धीमापन आने का अनुमान है, जिसमें विकास के मामले में दक्षिण एशिया का स्थान **लैटिन अमेरिका और कैरेबियाई देशों** के बाद आएगा।

प्रेषण:

- प्रेषण एक प्रकार का **धन अंतरण हैं जो प्रवासियों द्वारा अपने देश में परिवारों और दोस्तों को भेजा** जाता है।
- यह कई **विकासशील देशों, विशेष रूप से दक्षिण एशिया में** आय और विदेशी मुद्रा का एक प्रमुख स्रोत है।
- **गरीबी कम करने, जीवन स्तर में सुधार, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तथा आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित** करने में प्रेषण काफी मदद कर सकता है।

विश्व भर में प्रेषण पैटर्न:

- वर्ष 2022 में शीर्ष पाँच प्रेषण प्राप्तकर्त्ता **देश "भारत, मैक्सिको, चीन, फिलीपींस और पाकिस्तान"** थे।
- वर्ष 2023 में निम्न और मध्यम आय वाले देशों (LMIC) में प्रेषण प्रवाह **1.4% तक सीमित रहने का अनुमान** है जिसमें **कुल प्रवाह 656 बिलियन अमेरिकी डॉलर** होने का अनुमान है।
- **पूर्वी एशिया और प्रशांत क्षेत्र** में तंग मौद्रिक रुख, सीमित राजकोषीय पूंजी तथा भू-राजनीतिक घटनाओं के चलते उत्पन्न वैश्विक अनिश्चितता के कारण **प्रेषण वृद्धि में गिरावट देखी जा सकती है।**
- यूक्रेन और रूस **में कमज़ोर प्रवाह**, रूसी रूबल का मूल्यह्रास तथा उच्च आधार प्रभाव से प्रभावित होने के कारण यूरोप तथा मध्य एशिया **में प्रेषण 1% बढ़ने की उम्मीद** है।
- **मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका** में प्रेषण की स्थिति में तेल की कीमतों में गिरावट के साथ सुधार हो सकता है, विशेष रूप से **मिस्र** जैसे देशों में।
- वर्ष 2023 में **पूर्वी एशिया और प्रशांत क्षेत्र** के साथ-साथ **उप-सहारा अफ्रीका** के लिये **प्रेषण वृद्धि दर लगभग 1% होने का अनुमान** है।
- प्रेषण प्रवाह ने **ताजिकिस्तान, टोंगा, लेबनान, समोआ और किर्गिज़ गणराज्य** जैसे देशों में **चालू खाते एवं राजकोषीय कमी के वित्तपोषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाई है।

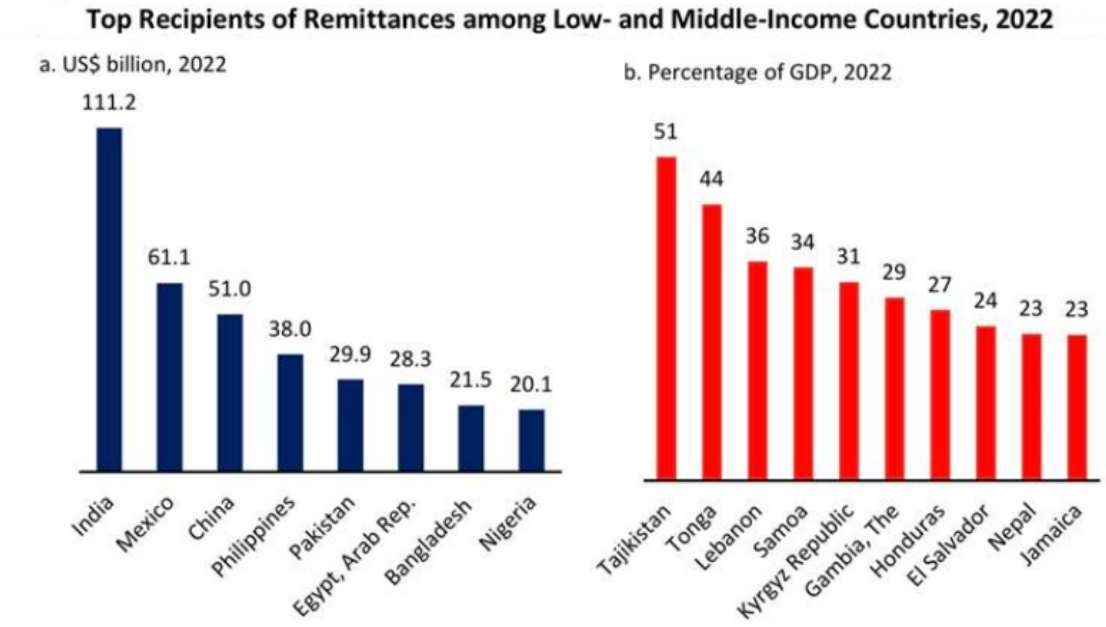

//

भारत में प्रेषण प्रवाह को प्रभावित करने वाले कारक:

- **भारत के लिये प्रेषण के शीर्ष स्रोत:**
  - भारत के प्रेषण का लगभग **36% तीन उच्च आय वाले देशों** क्रमशः **अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और सिंगापुर में उच्च कुशल भारतीय प्रवासियों** से प्राप्त होता है।
  - महामारी के बाद की रिकवरी ने इन क्षेत्रों में एक तंग श्रम बाज़ार का नेतृत्व किया है जिसके परिणामस्वरूप वेतन वृद्धि हुई जिसने प्रेषण को बढ़ावा दिया।
  - अन्य उच्च आय वाले देशों में ऊर्जा की उच्च कीमतें और खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाया गया जैसे [खाड़ी सहयोग परिषद (GCC)](#) में, जिस कारण भारतीय प्रवासियों को **अनुकूल आर्थिक परिस्थितियों का लाभ** हुआ तथा **प्रेषण प्रवाह में वृद्धि** हुई।
- **भारत में प्रेषण प्रवाह को प्रभावित करने वाले कारक:**
  - **OECD अर्थव्यवस्थाओं में धीमी वृद्धि:** [आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD)](#) 38 उच्च आय वाले लोकतांत्रिक देशों का समूह है। ये **देश उच्च-कुशल एवं उच्च तकनीक वाले भारतीय प्रवासियों के लिये प्रमुख गंतव्य हैं, जहाँ से भारत अपने प्रेषण का लगभग 36% हिस्सा** प्राप्त करता है ।
    - विश्व बैंक को उम्मीद है कि इन अर्थव्यवस्थाओं की वृद्धि **वर्ष 2022 के 3.1% से घटकर वर्ष 2023 में 2.1% और वर्ष 2024 में 2.4%** हो जाएगी।
      - यह IT कर्मचारियों की मांग को प्रभावित कर सकता है और अनौपचारिक मनी ट्रांसफर चैनलों की ओर औपचारिक विप्रेषण का मार्ग बदल सकता है।
  - **GCC देशों में प्रवासियों की कम मांग:** GCC छह मध्य पूर्वी देशों- **सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन और ओमान** का एक राजनीतिक एवं आर्थिक गठबंधन है।
    - ये देश **कम कुशल दक्षिण एशियाई प्रवासियों के लिये सबसे बड़े गंतव्य हैं, यहाँ से भारत के प्रेषण का लगभग 28%** हिस्सा प्राप्त होता है।
    - विश्व बैंक को उम्मीद है कि इन देशों की वृद्धि **वर्ष 2022 के 5.3% से धीमी होकर वर्ष 2023 में 3% और वर्ष 2024 में 2.9%** हो जाएगी।
    - यह मुख्य रूप से तेल की कीमतों में गिरावट के कारण है, जिसने उनके राजकोषीय राजस्व और सार्वजनिक व्यय को प्रभावित किया है।

भारत में प्रेषण प्रवाह को बढ़ाने के तरीके:

- **एकीकृत भुगतान इंटरफेस:** UPI रीयल-टाइम फंड ट्रांसफर को सक्षम कर सकता है, जिससे रेमिटेंस को तुरंत भेजा और प्राप्त किया जा सकता है। यह पारंपरिक **प्रेषण विधियों से जुड़े लंबे प्रसंस्करण समय की आवश्यकता को समाप्त करता है,** जिसमें धन को प्राप्तकर्त्ताओं तक त्वरित रूप से पहुँचाया जाता है।
  - जनवरी 2023 में [भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम](#) **(National Payments Corporation of India- NPCI) ने 10 देशों में रहने वाले NRI को अपने अंतर्राष्ट्रीय मोबाइल नंबरों का इस्तेमाल करके UPI का उपयोग करने की अनुमति दी।**
  - इन 10 देशों में **सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, हॉन्गकॉन्ग, ओमान, कतर, संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और यूनाइटेड किंगडम** शामिल हैं।

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence- AI) संचालित जोखिम मूल्यांकन:** भारत **लेन-देन स्वरूप का विश्लेषण करने, संभावित धोखाधड़ी का पता लगाने और प्रेषण हस्तांतरण संबंधी जोखिम कारकों का आकलन करने हेतु AI एल्गोरिदम का उपयोग** कर सकता है।
    - यह दृष्टिकोण सुरक्षा को बढ़ा सकता है, अवैध गतिविधियों को रोकने में मदद कर सकता है और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित कर सकता है।
- **ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ एकीकरण:** भारत **प्रेषण सेवाओं को सीधे अपने प्लेटफॉर्म में एकीकृत करने हेतु ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ सहयोग** कर सकता है।
    - यह **प्राप्तकर्त्ताओं को ऑनलाइन खरीद या बिल भुगतान हेतु प्रेषण निधियों का उपयोग करने**, वित्तीय समावेशन को बढ़ाने और प्रेषण उपयोग के दायरे का विस्तार करने में सक्षम बनाता है।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/remittance-inflow